02

छोटा जादूगर

लेखकः जयशंकर प्रसाद

रचनाकार का परिचय : महान लेखक और कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म – सन् 1889 ई. में हुआ तथा मृत्यु – सन् 1937 ई में हुई।बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। बचपन में ही पिता के निधन से पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोझ इनके कंधों पर आ गया। मात्र आठवीं तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का विशद ज्ञान प्राप्त किया। जयशंकर प्रसाद छायावाद के कवि थे। यह एक प्रयोगधर्मी रचनाकार थे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं : –झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य) स्कंदगुप्त चंद्रगुप्त, पुवस्वामिनी जन्मेजय का नागयज्ञ राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घुँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र प्रायश्चित सज्जन (नाटक) छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी. इंद्रजाल (कहानी संग्रह) तथा कंकाल तितली इरावती (उपन्यास)।

अधिगम प्रतिफल :

- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों, रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं–कहानी। किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।

पाठ का परिचय– प्रस्तुत कहानी एक चरित्र प्रधान कहानी है जिसमें एक बालक के साहस, स्वावलंबन, स्वाभिमान और मातृ सेवा के गुणों को प्रदर्शित किया गया है। एक निर्धन माँ बाप के प्रेम से वंचित बालक का, कठिनाइयों से लड़ते हुए जीने का सुंदर प्रयास प्रस्तुत किया गया है। बालक की उम्र कम है,माँ बीमार है, पिता जेल में है फिर भी बालक हार नहीं मानता किसी के सामने भीख नहीं मांगता बल्कि स्वाभिमान के साथ काम करके जीता है।

पारिवारिक परिस्थितियों और जिम्मेवारियों के कारण समय से पहले ही उसकी मानसिक स्थिति परिपक्व हो चुकी है।उसकी समझदारी में खुद उसका बचपन कही खो गया है।

© JCERT not to be republished

सार–संक्षेप

इस कहानी में एक बालक का माता के प्रति प्रेम, व्यवहार की कुशलता और परिश्रम से जीवन बिताने का वर्णन है। लेखक बड़े दिन की छुट्टियों में कोलकाता घूमने गया। वहाँ एक मेले में उसने एक तेरह–चौदह वर्ष के बालक को देखा।

वह जादू के छोटे–छोटे खेल दिखाकर अपनी बीमार माँ का इलाज कराता था। कहानी का अंत छोटे–जादूगर की बाँहों में उसकी माँ के निधन के साथ होता है।

गद्यांश की व्याख्या–1

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी, हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैंने उससे सहमत होकर कहा–''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया। (पृष्ठ संख्या 5–6)

शब्दार्थ –

विषाद – दुख

आकर्षित – अपनी ओर खींचना

धैर्य – धीरज

प्रगल्भता – होशियारी, निर्भीकता

वाणी – बोली

व्याख्या –

प्रस्तुत अंश में लेखक कहता है कि कार्निवल के मैदान में एक लड़का शांत भाव से इधर–उधर देख रहा था। उसके चेहरे पर दुख और धैर्य की रेखा साफ दिखाई दे रही थी जिसके कारण लेखक उस बालक की ओर आकर्षित हो गया।

लेखक ने जब लड़के से पूछा तुमने मेले में क्या देखा तो उसने मेले में दिखाए जाने वाले सभी प्रकार के खेल तमाशा के बारे में बताया जादूगर को निकम्मा बताते हुए उसने बड़ी होशियारी के साथ कहा

© JCERT not to be republished

कि इससे अच्छा खेल तो वह दिखा सकता है, पर्दे के अंदर जो खेल दिखाया जाता है उसमें टिकट लगता है इसलिए वह वहां नहीं गया लेखक ने जब इच्छा जाहिर कि वह वहाँ ले जाएँगे तब लड़के ने साफ इनकार कर दिया उसने कहा वहाँ जाने से अच्छा है निशाना लगाना लेखक द्वारा शरबत पीने के प्रश्न पर लड़के ने हाँ में उत्तर दिया।

1. रिक्त स्थानों को भरेंः–

क. कार्निवल के मैदान में ....जगमगा रही थी।

ख. हँसी और विनोद का......................................गूँज रहा था।

ग. लड़का चुपचाप......................................पीने वालों को देख रहा था।

घ. जादूगर तो बिल्कुल .... है।

ङ. उसकी .... मैं कहीं रुकावट न थी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में देंः–

प्रश्न 2. – कौन से मैदान में बिजली जगमगा रही थी।

प्रश्न 3. – किसका कलनाद गूँज रहा था?

प्रश्न 4. – लड़का किसे देख रहा था?

प्रश्न 5. – लड़के के गले में कैसी रस्सी पड़ी थी?

प्रश्न 6. – लड़के को क्या अच्छा लगता था?

प्रश्न 7. – लड़का कौन सा खेल दिखा सकता था?

प्रश्न 8. – लेखक ने क्या पीने का प्रस्ताव रखा?

9. उचित विशेषण शब्द लिखेंः–

क.______________ फुहारे

ख.______________ कुरते

ग.______________ विषाद

© JCERT not to be republished

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें (20–30 शब्दों में)

प्रश्न 10. लड़के ने मेले में क्या क्या देखा?

गद्यांश की व्याख्या–2

'मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी गर्म ....मैं हूं छोटा जादूगर।' (पृष्ठ संख्या 6–7)

व्याख्या –

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहता है कि मनुष्य की भीड़ इतनी थी कि जाड़े की संध्या ठंड के बदले गर्म हो रही थी लेखक ने जब लड़के से उसके माता–पिता के बारे में पूछा तो लड़के ने जवाब दिया पिता उसके जेल में है, देश के लिए और उसकी माँ बहुत बीमार है जिसकी सेवा और दवाई के जेल नहीं गया। वह यह भी कहता है कि यदि उसे शरबत ना पिलाकर कुछ पैसे दे दिए होते तो से अधिक प्रसन्नता होती तेरह–चौदह वर्ष के लड़के के मुख से इतनी बड़ी बात सुनकर लेखक को बहुत आश्चर्य हुआ और उस

लड़के को लेकर वहां पहुंचे जहां निशाने लगाकर खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था लड़के को बारह टिकट खरीद कर दिया और लड़के ने बारह के बारह खिलौने जीत लिए तमाशा दिखाने की बात कहकर लड़का तुरंत वहां से भाग गया लेखक को लगा कि वह इतनी जल्दी बदल गया है और वह पान खाकर इधर–उधर मेले में घूमने लगे तभी झूले के हिंडोले से किसी ने पुकारा ''बाबूजी'' पूछने पर उस लड़के ने अपना परिचय दिया 'मैं हूँ छोटा जादूगर।'

11. रिक्त स्थानों को भरेंः–

क. मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की....................................भी गरम हो रही थी।

ख. उसके मुँह पर....................................की हँसी फूट पड़ी।

ग. मैं आश्चर्य से उस ....वर्ष के लड़के को देखने लगा।

घ. चारों ओर बिजली के ....नाच रहे थे।

ड. वह निकला पक्का .... ।

© JCERT not to be republished

च. उसने.....................................खिलौनों को बटोर लिया।

छ. मैं घूमकर.....................................की दुकान पर आ गया।

ज. अकस्मात किसी ने ऊपर हिंडोले से पुकारा–''.....................................!''

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दे–:

प्रश्न 12. लड़के के पिता किसके लिए जेल गए थे?

प्रश्न 13. लड़के की उम्र कितनी थी?

प्रश्न 14. लड़के की माँ कैसी थी?

प्रश्न 15.. लेखक ने लड़के को कितने टिकट खरीद कर दिए?

प्रश्न 16. लेखक झूले के पास क्या देख रहा था?

प्रश्न 17. अकस्मात लेखक को किसने और क्या कह कर पुकारा?

प्रश्न 18. लड़के ने कितने खिलौने बटोरे?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें (20–30 शब्दों में)

प्रश्न 19. लड़का खेल–तमाशा क्यों दिखाना चाहता था?

प्रश्न 20. लेखक लड़के को लेकर कहाँ पहुंचा?

प्रश्न 21. लेखक ने लड़के को कितने टिकट खरीद कर दिया और उसने कितने खिलौने जीते?

प्रश्न 22. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखें।

क. दंग रह जाना।

ख. आंख बदल जाना।

ग. नौ दो ग्यारह हो जाना।

© JCERT not to be republished

गद्यांश की व्याख्या–3

कलकत्ता के सुरम्य बोटानिकल–उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्दी लौट आना चाहता था। (पृष्ठ संख्या 7–9)

व्याख्या –

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहता है कि एक दिन वह कोलकाता के सुरम्य में बॉटनिकल उद्यान में अपने मित्र मंडली के साथ बैठे हुए जलपान कर रहे थे कि वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा जो हाथ में चारखाने खादी का झोला लिए मस्तानी चाल में झूमता हुआ खेल दिखाने की बात करता है, लेखक के ना कहने से पहले ही उनकी पत्नी खेल दिखाने को कहती है। लड़का कार्निवल में जीते सभी खिलौने के माध्यम से खेल दिखाने लगा। भालू, बिल्ली, बंदर, गुड़िया, गुड्डा सभी लड़के की वाचालता के कारण अभिनय हो रहा था, सभी हँसते–हँसते, लोट–पोट हो गए लेखक उस बच्चे को देखकर सोचने लगा जीवन की आवश्यकता ही सबसे बड़ी चीज है जिससे एक छोटा बालक भी बहुत जल्दी समझदार हो जाता है। लड़के ने अपनी जादूगरी से सभी पत्ते को लाल, फिर काला कर दिया। गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े कर जोड़ दिए। जब अपना खेल समाप्त कर लिया तब उनकी पत्नी ने उसे ₹1 दिए लेखक को इस पर आपत्ति थी गुस्से में कहा लड़के उस लड़के ने जवाब दिया मुझे छोटा जादूगर कहिए यही मेरी आजीविका है उस ₹1 से वह पहले भरपेट पकौड़े खाएगा, फिर माँ के लिए एक सूती कंबल लेगा। लेखक को यह सब सुनकर ईर्ष्या के बदले अपने ऊपर लज्जा आई।

उस छोटे से बनावटी जंगल में शाम को वातावरण शांत हो जाने के कारण लेखक अपने साथियों के साथ हावड़ा की ओर आ रहे थे उन्हें बार–बार छोटा जादूगर याद आ रहा था तभी एक झोपड़ी के पास वही लड़का दिखाई दिया। लेखक गाड़ी रोककर उससे जब पूछा यहां तुम क्या कर रहे हो, तो उसने जवाब दिया, मेरी माँ को अस्पताल वालों ने निकाल दिया है और मेरी माँ यही रहती है। झोपड़ी के अंदर लेखक ने जाकर देखा एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी उस लड़के ने अपने द्वारा खरीदे कंबल को माँ के शरीर पर रखते हुए कहा 'माँ'। यह देखकर लेखक अत्याधिक भावुक हो उठे और उनकी आँखों से आँसू निकलने लगे।

23. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना ....करने लगे।

ख. बंदर ....लगा।

ग. लड़के की....................................से ही अभिनय हो रहा था।

© JCERT not to be republished

घ. ....सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी।

ड. 'मेरी माँ यही है न। अब उसे.......................................ने निकाल दिया है'।

छ. मेरी आँखों से.......................................निकल पड़े।

ज. बड़े दिन की .... बीत चली थी।

झ. ताश के पत्ते....................................... हो गए।

ज. श्रीमती जी ने धीरे से उसे ....दे दिया।

ट. छोटा ....कहिए।

ठ. एक....................................... लूँगा।

ड. हम लोग.......................................देखने के लिए चल दिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।

प्रश्न 24. ताश के पत्ते कैसे हो गए?

प्रश्न 25. लेखक की पत्नी ने कितना रुपया दिया?

प्रश्न 26. लड़के की जीविका कैसे चलती थी?

प्रश्न 27. लाल कमलिनी कहा भरा हुआ था?

प्रश्न 28. लेखक के पत्नी की वाणी कैसी थी?

प्रश्न 29. लड़के के खेल में कौन अभिनय कर रहे थे?

प्रश्न 30. बालक को किसने चतुर बना दिया?

प्रश्न 31. खिलौनों द्वारा अपना अभिनय कैसे हो रहा था?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें (20–50शब्दों में)

प्रश्न 32. लेखक अपनी मंडली के साथ कहां बैठे थे?

प्रश्न 33. लड़के की वेशभूषा कैसी थी?

प्रश्न 34. सभी खिलौने अपना अभिनय कैसे कर रहे थे?

© JCERT not to be republished

प्रश्न 35. लड़के ने अपना खेल कैसे दिखाई ?

प्रश्न 36. लेखक की पत्नी के द्वारा दिए एक रुपए का लड़का क्या करना चाहता था?

गद्यांश की व्याख्या–4

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी।..........................उस उज्जवल धूप में समग्र संसार जैसे जादू सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा। (पृष्ठ संख्या 9 – 10)

व्याख्या –

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहता है कि बड़े दिनों की छुट्टी बीत चली थी और अब ऑफिस पहुँचना जरूरी था इसलिए अंतिम बार उन्हें उस बगीचे को देखने की इच्छा हुई और यह भी इच्छा मन में आई कि यदि वह जादूगर दिखाई दे जाता तो और भी अच्छा होता लेखक ने इसी इच्छा के साथ उद्यान की ओर चल पड़े। सड़क के किनारे ही उन्हें छोटा जादूगर दिखाई पड़ा, जो एक कपड़े पर रंगमंच सजा कर, खेल दिखा रहा था किंतु छोटे जादूगर की वाणी में प्रसन्नता नहीं झलक रही थी। वह हँसने की चेष्टा तो कर रहा था किंतु हँस नहीं पा रहा था। खेल जैसे ही समाप्त हुआ, वह तुरंत तेजी से घर की ओर जाना चाहता था जैसे ही लेखक ने पीठ थपथपाते हुए कहा आज तुमने मन से खेल क्यों नहीं दिखाया, तो उसने जवाब दिया– मेरी माँ ने कहा है कि उसकी घड़ी समीप है, उसका अंत समय आने वाला है। लेखक उस साधन विहीन रोज कमा कर खाने वाले लड़के की दशा के बारे में सही आकलन नहीं कर पाने के कारण क्रोध से कहा, फिर भी खेल दिखाने आ गए किंतु लड़के ने बड़ी ही निर्भीकता से जवाब दिया– क्यों नहीं आता! लेखक को अपनी भूल का एहसास होता है वह तत्क्षण लड़के के सामान को गाड़ी में फेंकते हुए उसके बताएँ मार्ग पर चलकर झोपड़ी के पास पहुंचे लड़का माँ–माँ पुकारते हुए घुसा, किंतु माँ के मुंह से 'बेटा' शब्द निकलने से पहले ही उसके प्राण निकल गए और बेटे की ओर बढ़ा। दुर्बल हाथ नीचे की ओर लुढ़क गया। छोटा जादूगर अपनी माँ से लिपट कर रोने लगा। यह सब देखकर लेखक को लगा कि उसके चारों ओर मानो कोई जादू रूपी संसार नाच रहा हो।

37. रिक्त स्थानों को भरें:–

क. बड़े दिनों की_____________बीत चली थी।

ख. माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी_________समीप है।

ग. उस ___________ में समग्र संसार जैसे जादू सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

© JCERT not to be republished

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।

प्रश्न 38. लेखक ने सड़क के किनारे क्या देखा?

प्रश्न 39. खेल दिखाते समय छोटे जादूगर की वाणी कैसी थी?

प्रश्न 40. लेखक को अचानक भीड़ में देखकर लड़के ने क्या किया?

प्रश्न 41. लेखक ने पीठ थपथपाते हुए क्या पूछा?

प्रश्न 42. लड़के की माँ ने लड़के से जाते समय क्या कहा था?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 20 से 30 शब्दों में दें।

प्रश्न 43. सड़क के किनारे जादू दिखाते समय छोटा जादूगर प्रसन्न क्यों नहीं था?

प्रश्न 44. लेखक और छोटे जादूगर के झोपड़ी में घुसते हैं, उस समय उसकी माँ की क्या स्थिति थी?

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी गरम हो रही थी यह पंक्ति में लेखक ने किस संदर्भ में लिखा है?

उत्तरः मेले में लोगों की भीड़ इतनी अधिक थी कि जाड़े की शाम में कंपकंपाती ठंड नहीं बल्कि गर्मी लग रही थी, जिससे प्यास भी अधिक लग रही थी इसलिए लेखक ने लड़के से शरबत पीने के लिए कहा। लड़के ने अपनी स्वीकारोक्ति दी इसी संदर्भ में लेखक ने कहा है कि मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी गर्म हो रही थी।

प्रश्न 2. लेखक उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को आश्चर्य से क्यों देखने लगा?

उत्तरः वह लड़का कमाकर अपनी बीमार माँ के लिए पथ्य और दवाई खरीदेगा और अपना पेट भरेगा क्योंकि उसके पिता देश के लिए जेल में है, उसके कंधे पर माँ की जिम्मेवारी है। माँ के प्रति कर्तव्य, मातृ सेवा की भावना, और इतनी कम उम्र में जिम्मेदारियों का निर्वाह करते उस लड़के की परिपक्वता को देखकर लेखक उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को आश्चर्य से देखने लगा।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 3. छुट्टियाँ बिताकर लेखक जब कलकत्ते से चला तो रास्ते में उसने क्या देखा?

उत्तर : छुट्टियाँ बिताकर लेखक जब कलकत्ते से चला चला तो रास्ते में उसने देखा कि सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था, वहां जादूगर अपना खेल दिखा रहा था किंतु उसकी वाणी में प्रसन्नता नहीं थी वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, किंतु स्वयं कांप रहा था मानो उसके रोएँ रो रहे थे।

प्रश्न 4. कहानी में लेखक ने छोटा जादूगर के लिए क्या–क्या किया?

उत्तर:

- लेखक ने छोटा जादूगर को शरबत पिलाया।
- जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था वहाँ बारह टिकट खरीद कर दिया।
- माँ की हालत खराब है यह सुनकर लेखक ने अपनी मोटर गाड़ी में बिठा कर छोटे जादूगर को उसके घर तक ले गया।

प्रश्न 5. आप कैसे कह सकते हैं कि छोटा जादूगर देश भक्त और मातृभक्त था?

उत्तर: लेखक द्वारा घर के बारे में पूछे जाने पर लड़के ने बड़े गर्व के साथ कहा कि देश की सेवा के लिए उसके बाबूजी जेल में है और माँ बीमार है उसके पथ्य और दवाई के लिए वह तमाशा दिखाता है। लेखक द्वारा शरबत पिलाने पर वह कहता है कि यदि इसके बदले आपने मेरा खेल देखकर कुछ रुपया दिया होता तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि छोटा जादूगर देश भक्त और मातृभक्त था।

प्रश्न 6. छोटा जादूगर के चरित्र की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर:

- छोटा जादूगर के ऊपर जिम्मेदारियों का भार इतना अधिक था कि उसे बचपन में ही परिपक्व बनाकर उसके बचपन को छीन लिया था उसे अपने पिता के जेल जाने पर दुख नहीं होता बल्कि गर्व होता है क्योंकि वे देश की सेवा के लिए गए थे।
- बीमार माँ की सेवा के लिए उसके भोजन दवाई की जरूरतें पूरा करने के लिए वह तमाशा दिखाता है भीख नहीं माँगता अतएव वह स्वाबलंबी लड़का था।

© JCERT not to be republished

- वाकपटुता के कारण वह अपने तमाशे दिखाने में जान डाल देता था।
- वह निडर था इसलिए लेखक से निर्भीकता पूर्वक कहता है कि, मुझे शरबत ना पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर कुछ रुपए दे दिया होता तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।

भाषा संदर्भ

अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी अस्ताचल शब्द के बाद गामी लगाकर अस्ताचलगामी बना है जिसका अर्थ होता है अस्त होता हुआ इस तरह 'गामी' लगाकर कुछ और शब्द बनाइए।

उत्तर :

अग्रगामी

ऊर्ध्वगामी

रथगामी

अभिगामी

अनुगामी

अविचलगामी

2. 'मैं उसकी ओर ना जाने क्यों आकर्षित हुआ उसकी वाणी में कहीं रुकावट ना थी।'

ऊपर लिखे वाक्य में आए शब्द 'आकर्षित' एवं 'रुकावट' क्रमशः 'इत' एवं 'आवट' प्रत्यय लग कर बने हैं– आकर्ष + इत = आकर्षित।

रुक + आवट = रुकावट

'प्रत्यय' ऐसे शब्द है जो मूल शब्द के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं।

पाठ से प्रत्यय वाले शब्दों को चुनकर मूल शब्द तथा प्रत्यय को अलग अलग कीजिए।

उत्तरः प्रसन्नता – प्रसन्न + ता

मस्तानी – मस्त + आनी

मिठास – मीठा + आस

© JCERT not to be republished

वाचालता – वाचाल + ता

स्फूर्तिमान – स्फूर्ति + मान

3."उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू –सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।" "उज्ज्वल" शब्द 'उत्+ज्वल' की संधि से बना है।

अतः क) त् के बाद यदि ज् हो तो त्, ज् में बदल जाता है।

ख) त् के बाद यदि श् हो तो त, च् में तथा श् छ् में बदल जाता है।

ग) त् के बाद यदि च् हो तो त् च में बदल जाता है।

घ) त् के बाद यदि ल् हो तो त् ल में बदल जाता है

उपर्युक्त नियमों के आधार पर आप नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिएः–

उत्+जन – सज्जन

उत्+लास – उल्लास

उत्+चारण – उच्चारण

उत्+लेख – उल्लेख

उत्+श्वास – उच्छ्वास

व्याख्या के प्रश्नोत्तर

उत्तरः क. बिजली, ख. कलनाद, ग. शरबत, घ. निकम्मा, ड. वाणी।

उत्तर 2. कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी।

उत्तर 3. हँसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था।

उत्तर 4. लड़का शरबत पीने वाले को देख रहा था।

उत्तर 5. लड़के के गले में सूत की रस्सी पड़ी थी।

© JCERT not to be republished

उत्तर 6. लड़के को निशाना लगाना अच्छा लगता था।

उत्तर 7. लड़का ताश का खेल दिखा सकता था।

उत्तर 8. लेखक ने शरबत पीने का प्रस्ताव रखा।

उत्तर 10. लड़के ने मेले में चूड़ी फेंकते हुए, खिलौनों पर निशाना लगाते हुए,तीर से नंबर छेदते हुए, जादूगर को खेल दिखाते हुए देखा।

उत्तर 11

क. संध्या

ख. तिरस्कार

ग. तेरह–चौदह

घ. लट्टू

ड. निशानेबाज

च. बारह

छ. पान

ज. ''बाबूजी''

उत्तर 12. लड़के के पिता देश के लिए जेल गए थे।

उत्तर 13. लड़के की उम्र तेरह–चौदह बरस थी।

उत्तर 14. लड़के की माँ बीमार थी।

उत्तर 15. लेखक ने लड़के को बारह टिकट खरीद कर दिया।

उत्तर 16. लेखक झूले के पास लोगों का ऊपर–नीचे आना देख रहा था।

उत्तर 17. अकस्मात लेखक को लड़के ने ''बाबूजी'' कहकर पुकारा।

© JCERT not to be republished

उत्तर 18. लड़के ने बारह खिलौने बटोरे।

उत्तर 19. देश की सेवा के लिए लड़के के पिता जेल में थे घर में बीमार माँ थी उसकी सेवा,पथ्य और दवाई के लिए तथा भीख ना माँग कर स्वावलंबन के साथ अपना पेट भरने के लिए वह लड़का खेल तमाशा दिखाना चाहता था।

उत्तर 20. लड़के की इच्छा थी कि वह उस जगह जाना चाहता था जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था, इसलिए लेखक ने लड़के को लेकर निशाना लगाने वाले दुकान के पास पहुँचा।

उत्तर 21. लेखक ने लड़के को बारह टिकट खरीद कर दिया और उसने कुल बारह खिलौने जीते।

उत्तर 22.

क. अर्थ – हैरान रह जाना

ख. अथ – नहीं पहचाना

ग. अर्थ – भाग जाना

उत्तर 23.

क. अभिनय

ख. घुड़कने

ग. वाचालता

घ. अस्ताचलगामी

ड. अस्पताल वालों

च. आँसू

छ. छुट्टी

ज. लाल

© JCERT not to be republished

झ. एक रुपया

झ. जादूगर

ट. कंबल

ठ. लता–कुंज

उत्तर 24. ताश के पत्ते लाल हो गए।

उत्तर 25. लेखक की पत्नी ने एक रुपया दिया।

उत्तर 26. लड़के की जीविका जादू दिखा कर चलती थी।

उत्तर 27. कलकत्ता का सुरम्य बोटनिकल–उद्यान लाल कमलिनी से भरा हुआ था।

उत्तर 28. लेखक के पत्नी की वाणी में माँ की सी मिठास थी।

उत्तर 29. लड़के के खेल में कार्निवल के सब खिलौने अपना अभिनय कर रहे थे।

उत्तर 30. बालक को आवश्यकता ने चतुर बना दिया।

उत्तर 31. लड़के की वाचालता से अभिनय हो रहा था।

उत्तर 32. लेखक अपनी मंडली के साथ कोलकाता के सुरम्य बोटानिकल–उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में बैठे हुए थे।

उत्तर 33. लड़के के हाथ में खादी का झोला था। साफ जांघिया और आधी बाँहों का कुरता, सिर पर मैला रुमाल सूत की रस्सी से बँधा था।

उत्तर 34. लड़के की वाचालता के द्वारा सभी खिलौने अपना अभिनय कर रहे थे। भालू मनाने लगा, बिल्ली रूठने लगी, बंदर घुड़कने लगा, गुड्डा वर काना निकला।

उत्तर 35. सभी ताश के पत्ते लाल हो गए फिर काले। गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। लड़के ने अपना खेल इस प्रकार दिखाया।

उत्तर 36. लेखक की पत्नी के द्वारा दिए एक रुपए पाकर वह भरपेट पकौड़ी खाना और एक सूती

© JCERT not to be republished

कंबल खरीदना चाहता था।

उत्तर 37.

क. छुट्टी

ख. घड़ी

ग. उज्ज्वल धूप

उत्तर 38. लेखक ने सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का सजा रंगमंच देखा।

उत्तर 39. खेल दिखाते समय छोटे जादूगर की वाणी में प्रसन्नता नहीं थी।

उत्तर 40. लड़के ने भीड़ में लेखक को देखकर क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया।

उत्तर 41. लेखक ने पीठ थपथपाते हुए पूछा "आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?

उत्तर 42. लड़के की माँ ने कहा था आज तुरंत चले आना मेरी घड़ी समीप है।

उत्तर 43. सड़क के किनारे जादू दिखाते समय छोटे जादूगर की वाणी में प्रसन्नता नहीं थी औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था किंतु स्वयं काँप रहा था क्योंकि घर से निकलते समय माँ ने कहा था "आज तुरंत चले आना मेरी घड़ी समीप है।"

उत्तर 44. लेखक और छोटे जादूगर की झोपड़ी में घुसते हैं उस समय उसकी माँ के मुख से शब्द भी पूरी तरह नहीं निकल पाया बेटे की ओर उसने दुर्बल हाथ बढ़ाएं किंतु क्षण भर में ही उसके प्राण निकल गए।

© JCERT not to be republished